मनोज
चित्र
कथा
संख्या 55
मौत से टक्कर
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
Scanned And Uploaded By ProXy

लेखक : बिमल चटर्जी

मौत से टक्कर

चित्रांकन : प्रताप मुलिक

ब्रह्माण्ड के दो उन्नत ग्रह वारटोम और जैकूला में वैज्ञानिक युद्ध छिड़ता है और जैकूला का सम्राट मंडोला अपने देश की बार-बार की हार से चिन्तित होकर अपनी फोर्स के कमान्डर जोरो को पृथ्वी पर अपने एक मित्र प्रोफेसर भास्कर से सहायता मांगने भेजता है। उनका यान भारत के ही एक पहाड़ी क्षेत्र में उतरता है और वहां कमाण्डर जोरो की मुलाकात राम-रहीम से होती है। राम, रहीम को वहीं छोड़ प्रोफेसर भास्कर को लेने चला जाता है, लेकिन अगले दिन सुबह जब राम प्रोफेसर को लेकर वहां पहुंचता है तो जैकूला के यान पर भारतीय फोर्स आक्रमण कर चुकी होती है। राम उस आक्रमण को रुकवाने के लिये प्रोफेसर के साथ किसी प्रकार सैनिकों का घेरा तोड़कर यान की ओर भाग निकलने में सफल हो जाता है, लेकिन···आगे क्या होता है—? यह जानने के लिये पढ़ें प्रस्तुत चित्रकथा 'मौत से टक्कर'।

मैं ठीक कह रहा हूं कमाण्डर, यदि जल्द ही यान को न उड़ाया गया तो इस भयानक गोलाबारी से यान को नुकसान भी पहुंच सकता है।
उफ! अब क्या होगा?
सब किये-कराए पर पानी फिर गया। अब यान को इस स्थिति में लैंड किये रखना खतरे से खाली नहीं होगा। यदि यान नष्ट हो गया तो फिर हम कभी भी अपने देश वापस नहीं लौट पायेंगे।

मि. हम्फी, यान को स्टार्ट करो और वापस अपने देश लौट चलो। जल्दी करो।
यस सर!

लेकिन कमाडर, प्रोफेसर भास्कर...!
देवता को शायद हमारी असफलता ही मंजूर है। उनके लिये इस स्थिति में इन्तजार करना अब जरा भी सम्भव नहीं!
ओह!

उधर—
कौन हो तुम लोग और यहाँ कैसे चले आये? क्या तुम्हें पहरेदारों ने रोका नहीं?
यह सब बताने का समय नहीं है सर! कृपया, पहले यान पर किये जा रहे आक्रमण को रोकने का आदेश दीजिये!
क्या बकते हो, तुम्हारा दिमाग तो ठीक है! हम आक्रमण बन्द करके क्या उन्हें आक्रमण करने का मौका दें!
ऐसा कुछ भी नहीं होगा सर, मुझ पर विश्वास करें। फिलहाल मैं इतना ही बता सकता हूं कि उस यान में मौजूद व्यक्ति जो भी हैं, हमारे देश के दुश्मन नहीं, बल्कि मित्र हैं!

बको मत, बिना पूरी बात जाने-समझे हमें ऐसा आदेश कदापि नहीं दे सकते!
सर, मुझे तो ऐसा लगता है कि ये दोनों हमारी कार्यवाही में बाधा पहुंचाने की गर्ज से ही यहां आये हैं, ताकि उन अज्ञात अपराधियों की योजना पूरी हो सके।
नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। आप अकारण ही हम पर सन्देह कर रहे हैं।
तब सच-सच बताओ कि बात क्या है और तुम लोग यहां क्यों आये हो?
ओह! अब इन्हें सबकुछ बताना ही पड़ेगा।
और राम ने संक्षेप में उन्हें सारा किस्सा कह सुनाया।
परन्तु इस बात का क्या प्रमाण है कि तुम जो कुछ भी कह रहे हो वह सच ही है!
फिलहाल हमारे पास कोई प्रमाण नहीं। हां, उनसे बातचीत करने पर आपको अवश्य विश्वास हो जायेगा।
यह ठीक ही कह रहा है। विश्वास कीजिये!
सर, इनकी बात पर जरा भी विश्वास नहीं किया जा सकता। ये जो कोई भी हैं, मुझे खतरनाक लगते हैं। इन्हें गिरफ्तार कर लेना चाहिए, बाद में पूछ-ताछ करेंगे।
ठीक है। सैनिको, ले जाओ इन्हें!
ओफ! अब इनसे माथा मारना बेकार है। पहले ही इन्हें समझाने में काफी समय नष्ट हो चुका है। मुझे जल्दी ही कुछ करना चाहिये।
और अगले ही पल राम ने गजब की फुर्ती के साथ अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर कर्नल श्याम की कनपटी से सटा दिया।
खबरदार, कोई भी आगे न बढ़े, वरना तुम्हारा अफिसर अकारण ही मारा जायेगा।
व्हाट नानसेंस!
अरे!
???

सॉरी आफिसर, मैं और अधिक समय गंवाने के मूड में नहीं हूं। आपके हठ से मेरे साथी रहीम की जान पर भी बन सकती है। यदि आपको अपने आफिसर की जान प्यारी है तो तुरन्त अपने अधीनस्थों को यान पर आक्रमण बन्द करने का आदेश दीजिये, वरना...!

नहीं मेजर, ऐसा हरगिज नहीं करना। यह मेरा आदेश है।

परन्तु इससे पहले कि उनके मध्य कोई फैसला हो पाता, जैकूला यान एक तेज आवाज के साथ एकाएक ऊपर उठने लगा।

तभी कर्नल श्याम ने क्रोध में भरकर राम के चेहरे पर एक जोरदार घूंसा रसीद किया।
मूर्ख, वे तुम्हारे ही कारण निकल भागने में सफल हुए हैं। अब तुम्हें इसका दण्ड भुगतना होगा!
आह!
राम, मेरे बच्चे!
सैनिको, गिरफ्तार कर लो इन दोनों को।
शीघ्र ही प्रो० भास्कर और राम को गिरफ्तार कर सैनिक काफिला वहां से वापस लौट पड़ा।
चिन्ता मत करो बेटे! उच्चाधिकारियों से बात करके मैं सब ठीक कर लूंगा। हम ज्यादा समय तक इनकी कैद में नहीं रहेंगे।
मुझे अपने कैद कर लिये जाने की चिंता नहीं प्रोफेसर अंकल, बल्कि रहीम के लिये चिन्तित हूं, पता नहीं वे उसके साथ कैसा सलूक करें।
उधर जैकूला यान के भीतर एक कमरे में बैठा रहीम किसी पत्रिका को पढ़ने में मग्न था। उसे न तो यान के उड़ान भरने के विषय में पता था और न ही यान पर होने वाले भारतीय आक्रमण के विषय में ही कुछ बताया गया था।
आहा! यह पत्रिका तो वास्तव में बहुत मनोरंजक है। काफी आश्चर्यजनक बातें लिखी हैं इसमें, जैकूला व अन्य ग्रहों के बारे में। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि दूर अन्तरिक्ष सौर मण्डल में पृथ्वी की तरह अन्य बहुत से ग्रह आबाद होंगे और वहां भी जन-जीवन मौजूद होगा।
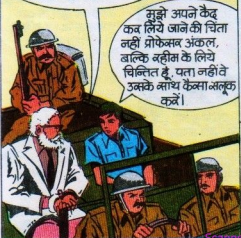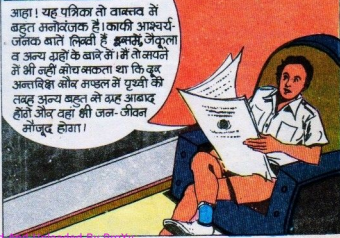
तभी चिन्तित कमाण्डर जोरो ने वहां प्रवेश किया और उसे देखते ही रहीम उत्सुकता से बोल उठा —

हैलो कमाण्डर, क्या मेरा भाई और प्रोफेसर आ गये?

नहीं, और अब शायद ही कभी तुम्हारी उनसे मुलाकात हो!

क्या मतलब?

तब कमाण्डर जोरो ने उसे यान पर हुए आक्रमण और सुरक्षा किरणों के यंत्र में आई खराबी के कारण वापस अपने ग्रह लौटने के बारे में सबकुछ बता दिया।

ओह! अब क्या होगा, कमाण्डर! राम मेरे लिये अवश्य ही चिन्तित हो रहा होगा!

घबराओ नहीं बेटे, हम कोशिश करेंगे कि अपने ग्रह से दूसरा यान लेकर पुनः पृथ्वी पर जायें और अपने अधूरे मिशन को पूरा करें!

परन्तु रहीम ने तो जैसे उसकी बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया था। वह अपने ही विचारों में खो चुका था।

उफ! क्या अब मैं जीवन भर राम से नहीं मिल पाऊंगा, क्या मेरी बाकी की जिन्दगी जैकूला ग्रह में ही बीतेगी? ओह! यह सब क्या हो गया?
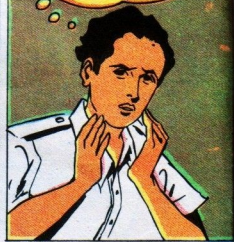
बकवास बन्द करो, हम तुम्हारी बात पर कतई विश्वास नहीं कर सकते। भला दूसरे ग्रह के वासियों से तुम लोगों की कैसे जान-पहचान हो सकती है। जरूर वे कोई भयानक मुजरिम होंगे, जो आधुनिक यान और वैज्ञानिक शक्ति से सम्पन्न थे। तथा यहां किसी भयानक उद्देश्य से आये थे!

मैं आपसे कई बार कह चुका हूं कि मुझे आप उच्चाधिकारियों को फोन करने दें, तब आपको विश्वास हो जायेगा कि हमने जो कुछ भी आपसे कहा वह सच है। मेरी अन्तरिक्ष यात्रा के बारे में केवल सरकार ही जानती है और सरकार ने यह बात किसी कारणवश गुप्त ही रखी है।

सुनकर कर्नल श्याम क्रोध से एकदम चीख उठा —

नहीं, हरगिज नहीं — जब तक हमें अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल जाता तुम्हें किसी से भी बात करने की इजाजत नहीं दी जायेगी।

यह बात है तो मैं भी देखता हूं कि तुम दोनों कब तक अपना मुंह बन्द रख सकते हो!
केप्टन फार्मूला नम्बर चार का प्रयोग करो, देखता हूं ये कैसे अपना मुंह नहीं खोलते!
यस सर!
और अगले ही पल—
आह!
अब भी बता दो!
आ...ई.. ..ई!
लेकिन राम और प्रोफेसर ने लाख पीड़ा होने के बावजूद भी अपनी जुबान बंद ही रखी। यह देख कर्नल श्याम, केप्टन को सम्बोधित कर क्रोध से फिर चीख उठा—
स्पीड और तेज करो केप्टन, लगता है यह डिग्री इन ढीठों के लिये बहुत कम है!
यस सर, अभी लीजिये!
आ...ई. ..ई...!
मैं कहता हूं बन्द करो यह मूर्खता! आ... ..ह...!
लेकिन कर्नल श्याम के दिल में उनके प्रति जरा भी रहम नहीं उपजा। परिणाम-स्वरूप उस भयानक यातना को सहन न कर सकने के कारण राम और प्रो० भास्कर बेहोश होकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर लुढ़क गये।
ये दोनों तो बेहोश हो गये सर!
जानता हूं, दोनों ही बड़े सख्त दिल के निकले। खैर, तुम इन्हें जाकर रूम नं. तीन में डाल दो। कल मैं किसी और ढंग से इनका मुंह खुलवाने की कोशिश करूंगा!
राईट सर!
अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र जैकूला यान के वापस लौट जाने और राम व प्रोफेसर की गिरफ्तारी के समाचारों से भरे पड़े थे। हालांकि कर्नल श्याम ने उन दोनों की गिरफ्तारी को काफी गुप्त रखा था, लेकिन न जाने कैसे अखबार वालों को इस की खबर लग गई थी।
आज की ताजा खबर! अपराधियों का दुश्मन राम और प्रोफे-सर भास्कर अज्ञात ग्रह-वासियों की मदद करने के अप-राध में गिरफ्तार!

जब वह समाचार राम के माता-पिता, राधादेवी और कर्नल राघव ने पढ़ा।

नहीं-नहीं, हमारा राम अपराधियों का साथी नहीं हो सकता। यह सब झूठ है।

धीरज रखो राधा! सब ठीक हो जाएगा। मुझे राम पर पूरा विश्वास है। वह जरूर सैनिक अधिकारियों की किसी गलतफहमी का शिकार हुआ है। मैं अभी उच्चाधिकारियों से बात करता हूं।

वह समाचार पढ़कर डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½ विभाग के चीफ मि. मुखर्जी भी चिन्तित हो उठे।

राम और प्रोफेसर भास्कर गिरफ्तार! उफ, यह जो कुछ भी हुआ, अच्छा नहीं हुआ। मुझे जल्दी से कुछ करना चाहिये, वरना उन्हें टार्चर भी किया जा सकता है!

शीघ्र ही वे तैयार होकर उच्चाधिकारियों से मिलने चल पड़े।

समझ में नहीं आता कि राम ने मुझसे उन अज्ञात यानवासियों से मिलने की बात क्यों छिपाई और रहीम का जिक्र उसके साथ अखबारों में क्यों नहीं आया? क्या वह उस समय उनके साथ नहीं था?
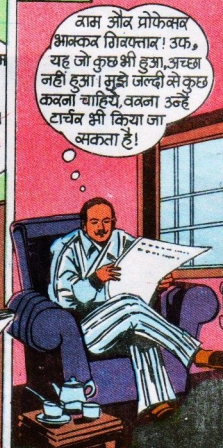
उधर अखबारों में छपे उन्हीं समाचारों को पढ़कर कर्नल श्याम अपने जूनियर आफिसरों पर बिफर रहा था।

मैं पूछता हूं कि आखिर उन दोनों के हमारी कैद में होने की खबर अखबार वालों को कैसे लग गई, जबकि मैंने आप लोगों से इस बात को गुप्त रखने की सख्त हिदायत दी थी।

माफी चाहता हूं सर, दरअसल कोई साहब इसी समय आपसे मिलना चाहते हैं। यह रहा उनका कार्ड!
ओह!

कर्नल श्याम ने कार्ड पर दृष्टि घुमाई—
रिटायर्ड कर्नल: एस. मुखर्जी
चीफ ऑफ सीक्रेट सर्विस 00½
ओह! कर्नल मुखर्जी!
सुनो उन्हें अन्दर भेज दो!
यस सर!

अर्दली के जाने के बाद—
जरूर कोई विशेष बात लगती है। खैर फिलहाल आप लोग जाइये। आपसे फिर बातें होंगी।
बेहतर है जनाब!

आफिसरों के जाने के कुछ ही क्षणोपरांत कर्नल मुखर्जी ने भीतर प्रवेश किया।
हैलो कर्नल!
हैलो!

बैठिये, और बताइये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।
बैठने का समय नहीं है कर्नल! मैं राम और प्रो. भास्कर को लेने आया हूं! कहां हैं वे दोनों?

सॉरी कर्नल, वे दोनों एक महत्वपूर्ण मामले में हमारी कस्टडी में हैं और उनसे आवश्यक पूछताछ की जा रही है।
जानता हूं, इसीलिये तो उच्चाधिकारियों से उनकी रिहाई के लिये आवश्यक कागजात भी लेता आया हूं। लीजिये, देखिये।

चीफ मुखर्जी द्वारा दिये गये कागजातों का निरक्षण करने के पश्चात्-
ठीक है कर्नल, यदि उच्चाधिकारियों का यही आर्डर है तो भला मुझे क्या एतराज हो सकता है। आप उन्हें ले जा सकते हैं।
धन्यवाद कर्नल! आपसे एक प्रार्थना भी है कि मेरी असलियत और राम व प्रोफेसर भास्कर द्वारा दी गई जानकारी का किसी को भी पता नहीं चलने पाये!

ठीक है, इस सम्बन्ध में पूरी गोपनीयता बरती जायेगी।
गुड, तो कृपया उन दोनों को यहां बुलवा दीजिये!
अभी लीजिये!
शीघ्र ही –
अरे–अंकल! अच्छा हुआ आप आ गये!
बरखुरदार, फिलहाल चुप ही रहो तो ज्यादा अच्छा है!
अच्छा कर्नल, अब मुझे आज्ञा दीजिये। वैसे विश्वास रखिये, इस पूरे काण्ड की छानबीन अब मैं स्वयं करूंगा।
मुझे विश्वास है कर्नल!
फिर चीफ मुखर्जी प्रो. भास्कर और राम को लेकर वहां से चल दिये।
एक जबरदस्त कामयाबी हाथ लगते-लगते रह गई, लेकिन समझ में नहीं आता कि उच्चाधिकारियों ने सब-कुछ जानते-बूझते भी राम और प्रो. भास्कर की रिहाई के आर्डर कैसे दे दिये?
तभी —
अरे, अब कौन आ रहा है?
कार निकट आकर रुकी और उसमें से कर्नल राघव उतरे। कर्नल श्याम शायद कर्नल राघव से भली-भांति परिचित था।
ओह, कर्नल राघव? ये यहां कैसे?

हैलो श्याम!
हैलो राघव! भाई तुम्हारे अचानक आने पर चकित हूं। खैर, पहले भीतर चलो, फिर बातें होंगी।
हां भाई, अब कहो कि यह अचानक आगमन कैसे हुआ?
मैं अपने बेटे राम के सिलसिले में तुम्हारे पास आया हूं श्याम! मुझे पता चला है कि इस समय वह तुम्हारी ही हिरासत में है।
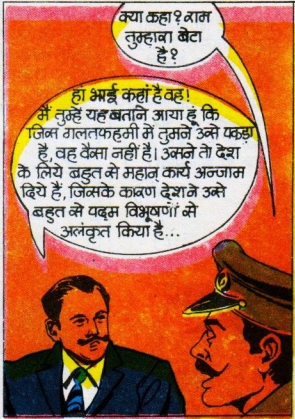
क्या कहा? राम तुम्हारा बेटा है?
हा भाई कहां है वह! मैं तुम्हें यह बताने आया हूं कि जिस गलतफहमी में तुमने उसे पकड़ा है, वह वैसा नहीं है। उसने तो देश के लिये बहुत से महान् कार्य अन्जाम दिये हैं, जिसके कारण देश ने उसे बहुत से पद्म विभूषणों से अलंकृत किया है...

...और मैं उसकी रिहाई के लिये गृह मंत्रालय से यह आदेश भी लाया हूं। लो, देखो।
नहीं-नहीं, अब इसकी कोई जरूरत नहीं...

...मेरी समझ में तो यह नहीं आ रहा कि उसने यह सब बातें मुझसे क्यों छुपाईं? तुम्हारे बेटे राम और रहीम का नाम तो मैंने बहुत सुना था लेकिन उन्हें पहले कभी देखा नहीं था। अतः सोच भी नहीं सकता था कि वह तुम्हारा ही बेटा होगा। मैं तो उसे कोई ऐसा-वैसा ही समझे हुए था...
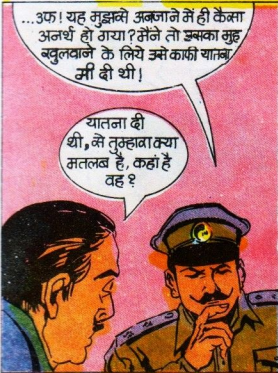
...उफ! यह मुझसे अनजाने में ही कैसा अनर्थ हो गया? मैंने तो उसका मुह खुलवाने के लिये उसे काफी यातना भी दी थी।
यातना दी थी, से तुम्हारा क्या मतलब है, कहां है वह?

उसे तो...!
बोलो-बोलो, तुम अचानक चुप क्यों हो गये?

दरअसल बात यह है राघव कि राम और प्रोफेसर को सेना के रिटायर्ड आफिसर कर्नल एस. मुखर्जी सरकारी आदेश पर तुम्हारे आने से कुछ ही देर पहले अपने साथ ले गये हैं।
ओह!

...और यह भी नामुमकिन है कि उसे इस घटना का पता न चला हो। खैर, अब तो राम से ही सारी सच्चाई मालूम करनी होगी।

तुमने मुझसे कुछ कहा!

नहीं! अच्छा भाई, अब मुझे आज्ञा दो, फिर मिलेंगे।

आफ कोर्स!

उधर बाल सीक्रेट सर्विस के हैडक्वार्टर में पहुंचकर जब राम ने चीफ मुखर्जी को सारी कहानी सुनाई—

उफ! मेरी समझ में नहीं आता कि तुमने यह सब कुछ मुझसे क्यों छुपाया। तुम्हें प्रोफेसर को फोन करने के साथ-साथ ही मुझे भी इन सारी घटनाओं से सूचित करना चाहिये था। जानते हो, यदि मुझे अखबार द्वारा तुम्हारी गिरफतारी का पता न चलता तो तुम्हारे साथ-साथ प्रोफेसर साहब की भी क्या दुर्गति होती!

सॉरी अंकल...

ऐसी स्थिति भी आ सकती है, इसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी अंकल। खैर, मुझसे जो मूर्खता हुई सो हुई। फिलहाल, आप हमारी चिन्ता छोड़ रहीम के विषय में सोचिये। न जाने इस समय उस पर क्या बीत रही होगी!
क्या खाक सोचूं, तुम्हारी मूर्खता से ही उसकी जान खतरे में पड़ी है।

मेरे विचार से तर्क-वितर्क करने से कोई उपाय नहीं निकलने वाला। हां, यदि हम कोशिश करें तो रहीम को जैकूला वासियों की गलतफहमी का शिकार होने से बचा सकते हैं।
ओह, वह कैसे?

सुनिये, मैं काफी समय से अन्तरिक्ष की एक और यात्रा पर जाने के लिये एक अनोखा शक्ति सम्पन्न एवं हर प्रकार के आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित यान बनाने में जुटा हुआ था। वैसे तो अब वह बनकर तैयार हो चुका है, लेकिन फिर भी छोटामोटा कुछ काम अभी शेष है,... मुझे विश्वास है कि यदि मैं रात-दिन उस पर मेहनत करूं तो वह ज्यादा से ज्यादा दस दिन के भीतर-भीतर अन्तरिक्ष में लम्बी से लम्बी उडान भरने के लिये तैयार हो जायेगा।

ओ-यू आर ग्रेट प्रोफेसर! आप जल्द-से-जल्द उस शेष कार्य को भी निपटा लें। तब तक मैं उच्चाधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करके यह तय करता हूं कि आपके साथ जाने के लिये कौन-कौन से व्यक्ति उपयुक्त रहेंगे!

ठीक है, तो अब मुझे इजाजत दीजिये। मे अभी जाकर अपने कार्य में जुट जाना चाहता हूं!
जाइये, ईश्वर आपको जल्द-से-जल्द सफलता प्रदान करे, लेकिन यान के तैयार होते ही सूचित करना न भूलियेगा!
अवश्य!

प्रोफेसर के जाने के बाद—
राम, अब तुम भी घर जाओ। तुम्हारे मम्मी-डैडी तुम्हारे लिये परेशान हो रहे होंगे, कोई विशेष बात हो तो मुझे सूचित करना।
ओ.के. चीफ अंकल। बॉय-बॉय!

जब राम अपने घर पहुंचा—
मैं तुमसे यह नहीं पूछूंगा राम कि तुम इस समय कहां से आ रहे हो, लेकिन यह जरूर पूछूंगा कि रहीम कहां है?
वो...वो डैडी...!
???

मुझे विश्वास है बेटे कि तुम इस बार झूठ और किसी बहाने का सहारा नहीं लोगे, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि रहीम तुम्हारे मुखर्जी अंकल के यहां नहीं है, वरना वह उनके साथ सैनिक छावनी अवश्य जाता।
ओह! लगता है डैडी को सबकुछ मालूम हो गया है! अब इन्हें असलियत बताने के अलावा और कोई चारा नहीं!
और राम द्वारा सारी कहानी बताने पर कर्नल राघव ने शायद जिन्दगी में पहली बार अपने इकलौते बेटे राम पर हाथ उठाया।
चटाक!
ड-डैडी!
खामोश मूर्ख तुम्हारी थोड़ी-सी बेवकूफी से नाहक ही रहीम के प्राण संकट में पड़ गये। यदि तुम यह सबकुछ मुझे पहले ही बता देते तो न रहीम की जान ही खतरे में पड़ती और न ही जैकूला वासियों के साथ इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा होता...
...अब खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो—जाओ अपने कमरे में और ध्यान रहे, मेरी आज्ञा के बिना अब तुम अपने कमरे से कदम भी बाहर नहीं निकालोगे।
राधा, जो कि रहीम को राम से भी ज्यादा प्यार करती थी फूट-फूटकर रो पड़ी।
हाय! अब क्या होगा स्वामी! कहां से लाऊंगी अपने बेटे रहीम को, आह! न जाने उस बेचारे पर इस समय क्या बीत रही होगी। कहीं वे लोग उसे मार ही न डालें!
धीरज रखो राधा! रहीम को कुछ नहीं होगा। ईश्वर अवश्य उस मासूम बेगुनाह की रक्षा करेगा।

इधर अपने कमरे में पहुंचकर राम भी बिस्तर पर गिर फूट-फूटकर रो पड़ा —
आह! मेरी वजह से ही तुम्हारे प्राण संकट में पड़े हैं रहीम भइया! सच रहीम, यदि तुम्हें कुछ हो गया तो मैं कभी अपने आपको क्षमा नहीं कर पाऊंगा। अपने हाथों ही अपनी बोटी-बोटी नोच डालूंगा।

जबकि उधर दूर आकाश गंगा में...
हम अपने ग्रह के निकट पहुंच चुके हैं मि. रहीम, वह जो सितारा तुम देख रहे हो, वही हमारा ग्रह जैकूला है।
वाह! अति सुन्दर लग रहा है!
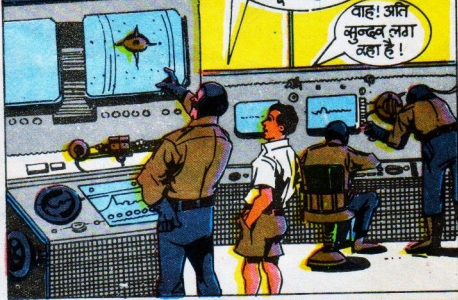
...अपने सम्राट के आदेश पर इन्हीं से निपटने के लिये हम तुम्हारी पृथ्वी पर प्रो. भास्कर से मदद मांगने गये थे, लेकिन बदकिस्मती से हमें असफल लौटना पड़ा।
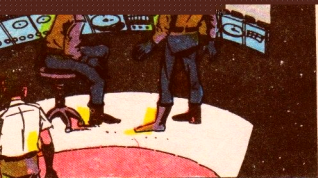
वे वास्तव में वारटोम के शक्तिशाली लड़ाकू यान थे, जिन्होंने पलक झपकते ही जैकूला यान को अपने घेरे में ले लिया।

उफ, अब तो भगवान् ही रक्षक हैं।

वारटोम के एक यान के भीतर—

कैप्टन हिन्क, जैकूला यान हमारे निशाने की जद में है, क्या उसे नष्ट कर दिया जाये !

नहीं, उन्हें आत्म-समर्पण करने का निर्देश दो। महामहिम का आदेश है कि उनके अन्य ग्रह से वापस लौटने पर उन्हें जिन्दा ही पकड़कर उनके सामने पेश किया जाये...

हैलो-हैलो-जैकूला वासियो, क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो-सुनो, मैं तुम लोगों से ही सम्बन्धित हूं। तुम लोगों का यान इस समय हमारी मार की जद में है...

...मैं मरते दम तक हथियार डालने का फैसला नहीं करता, लेकिन सवाल मि० रहीम की जिंदगी का है, जो कि इस समय हमारे मेहमान हैं और इनकी जिन्दगी खतरे में डालने का हमें कोई हक नहीं, उन्हें कह दो कि हम आत्मसमर्पण करने के लिये तैयार हैं।
राईट सर!

फिर कमाण्डर जोरो एक अन्य व्यक्ति की ओर पलटा—
और मि. सीवर, आप तुरन्त कंट्रोल रूम से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें जल्द से जल्द अब तक की सारी कहानी और घटनाओं से अवगत करा दीजिये, ताकि महामहिम मंडोला हमारे पृथ्वी से लौटने का इन्तजार ही करते न रह जाएं।
बहुत अच्छा कमाण्डर! अभी लीजिये।

कमाण्डर जोरो के आदमी ने तुरन्त अपने ग्रह के अन्तरिक्ष कन्ट्रोल से सम्पर्क करके सारी स्थिति की सूचना दे दी, जबकि उनके आत्मसमर्पण करते ही वारटोम के यान उनके यान को अपने घेरे में लिये अपने ग्रह की ओर बढ़ चले थे।

कुछ देर बाद—
जैकूला वासियों, हमारे यान के साथ-साथ उतरो। ध्यान रहे, किसी किस्म की चालाकी दिखाने की कोशिश की तो जान से हाथ धो बैठोगे।
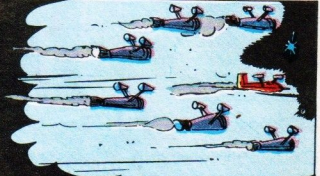
शीघ्र ही वारटोम के यानों के साथ जैकूला यान ने भी वारटोम की धरती पर लैण्ड किया, लेकिन जैसे ही कमाण्डर जोरो रहीम और कर्नल टोयो आदि यान से बाहर निकले उन्हें वारटोम के अनेक सशस्त्र सैनिकों ने अपने घेरे में ले लिया।
ले चलो इन्हें महामहिम के पास। वे ही इनसे पूछताछ और इनकी मौत और जिन्दगी का फैसला करेंगे।
उफ! अब शायद ही कभी राम भइया और अंकल-आंटी से मुलाकात हो!

ठीक उसी समय पृथ्वी पर—
रहीम... नहीं-नहीं...तुम्हें कुछ नहीं हो सकता रहीम...
रहीम से ही सम्बन्धित कोई भयानक सपना देखकर राम चीख उठा।
उसकी चीख सुनकर उसके मम्मी-डैडी घबराए से उसके कमरे में पहुंचे।
क्या हुआ बेटे! तुम रो क्यों रहे हो?
तुम चीखे क्यों थे राम? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?
डैडी, मैंने सपने में देखा कि कुछ भयानक इन्सान रहीम को मौत के घाट उतारने की तैयारी कर रहे हैं और रहीम सहायता के लिये मुझे पुकार रहा है।
नहीं..नहीं—ऐसा मत कहो बेटा!
रोओ मत बेटे, रहीम को कुछ नहीं होगा। एक-न-एक दिन वह जरूर हमें मिलेगा, तुमने एक भयानक सपना देखा है और सपने हकीकत नहीं होते...
...लो, पानी पिओ और सो जाओ!
इसी तरह एक-एक कर दिन बीतते रहे। इधर प्रोफेसर भास्कर अपने यान को सम्पूर्ण करने में व्यस्त थे...

...और उधर दूर अन्तरिक्ष में वारटोम ग्रह जैकूला पर लगातार आक्रमण कर रहा था।

जबकि जैकूला ग्रह का शासक महामहिम मन्डोला वारटोम द्वारा किये जा रहे आक्रमणों को रोक पाने में पूरी तरह लाचार विवश और असहाय था।

और एक दिन जब वारटोम ग्रह ने जैकूला पर पुनः भयानक आक्रमण किया।

हम इनसे मुकाबला करने में बिल्कुल असमर्थ हैं। इनसे युद्ध करना जान-बूझ कर मौत को गले लगाना है, वापस लौट चलो।

हां-हां, अब हम बेकार में अपने प्राण नहीं गंवाना चाहते। वापस लौट चलने में ही भलाई है।

और जैकूला की हवाई सेना मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई।

जैकुला का एयर मार्शल पियानो महामहिम मंडोला से मिला।
महामहिम, बार-बार की हार और जानी नुकसान से हवाई सेना का मनोबल पूरी तरह टूट चुका है, अतः वह वारटोम से युद्ध करने अथवा मुकाबला करने के लिये कतई तैयार नहीं।
उफ! कुछ समझ में नहीं आता कि हम क्या करें और क्या नहीं, काश! हम प्रोफेसर भास्कर को यहां ला पाने में...
बोलते-बोलते सहसा महामहिम मंडोला खामोश हो गये।
सम्राट मंडोला के दिमाग में अचानक ही एक विचार आया—
कमांडर जोरो ने अपने अन्तिम संदेश में बताया था कि मेरी दी हुई अंगूठी उसने प्रो. भास्कर के ही परिचित एक लड़के राम को सौंप दी थी, जिसका साथी उसके ही पास अमानत के रूप में रह गया था...
...यदि वह लड़का वास्तव में प्रोफेसर का परिचित है, तो मैं प्रक्षेपण यंत्र द्वारा अपनी त्रियामी तस्वीर पृथ्वी पर भेज कर उस अंगूठी के माध्यम से उस लड़के द्वारा प्रोफेसर से बात कर सकता हूं।
आप क्या सोचने लगे महामहिम?
सुनिये मार्शल, हमारे दिमाग में एक विचार आया है। कमाण्डर जोरो के अन्तिम सन्देशानुसार...।
फिर वह मार्शल पियानो को अपने विचारों से अवगत कराने लगा।
सुनकर मार्शल पियानो हर्ष से उछलता हुआ बोला—
आहा! महामहिम, यह बात आपने हमें पहले क्यों नहीं बताई। मेरे विचार से हमें तुरन्त प्रक्षेपण स्टेशन चल कर पृथ्वी पर त्रियामी तस्वीरें भेजनी चाहियें...आपकी अंगूठी जिसके भी पास इस समय होगी, त्रियामी तस्वीरें आसानी से उस तक पहुंच जायेंगी। फिर इसके माध्यम से प्रोफेसर तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।
आप ठीक कहते हैं मार्शल, आइये चलें।
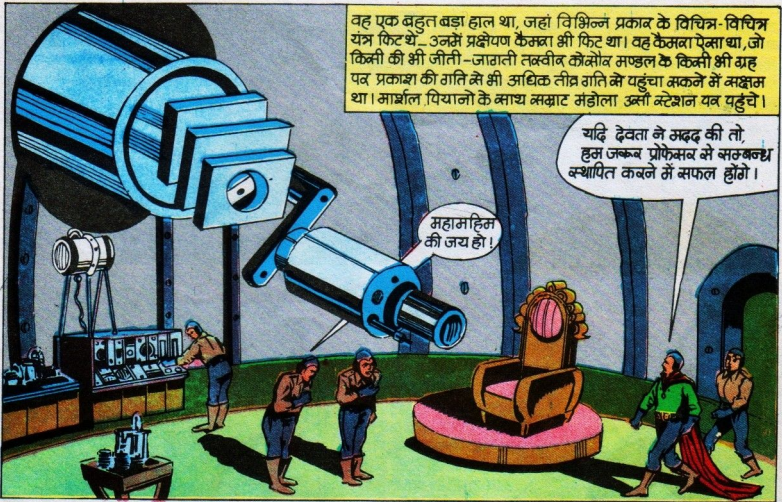
वह एक बहुत बड़ा हाल था, जहां विभिन्न प्रकार के विचित्र-विचित्र यंत्र फिट थे– उनमें प्रक्षेपण कैमरा भी फिट था। वह कैमरा ऐसा था, जो किसी की भी जीती-जागती तस्वीर को सौर मण्डल के किसी भी ग्रह पर प्रकाश की गति से भी अधिक तीव्र गति से पहुंचा सकने में सक्षम था। मार्शल पियानो के साथ सम्राट मंडोला उसी स्टेशन पर पहुंचे।

यदि देवता ने मदद की तो, हम जरूर प्रोफेसर से सम्बन्ध स्थापित करने में सफल होंगे।

महामहिम की जय हो!

इधर पृथ्वी के अनेक देशों में से एक देश भारत में —

काम खत्म हुआ। यान अब पूरी तरह उड़ान भरने में सक्षम है। आप सब जाकर आराम करें। यान के सम्पूर्ण रूप से तैयार हो जाने की खुशी में मैं आप लोगों को एक माह की पूर्ण छुट्टी देता हूं।

धन्यवाद प्रोफेसर!

सबके जाने के बाद —

मेरी वर्षों की मेहनत आखिरकार रंग लाई। कल मि. मुखर्जी को सूचित करूंगा, ताकि शीघ्र से शीघ्र जैकूला की यात्रा पर रवाना हो सकूं...

फिर प्रोफेसर खुली सांस लेने के लिये बाहर बने बाग में निकल आये।

रात के समय अन्तरिक्ष का नजारा कितना सुन्दर लगता है और इन सितारों और उल्काओं के मध्य से होकर आकाश गंगा की सैर करना, आहा! निःसन्देह मैं खुशकिस्मत हूं, जो मुझे अंतरिक्ष की अनेकों बार सैर करके आनन्द उठाने का मौका मिला।
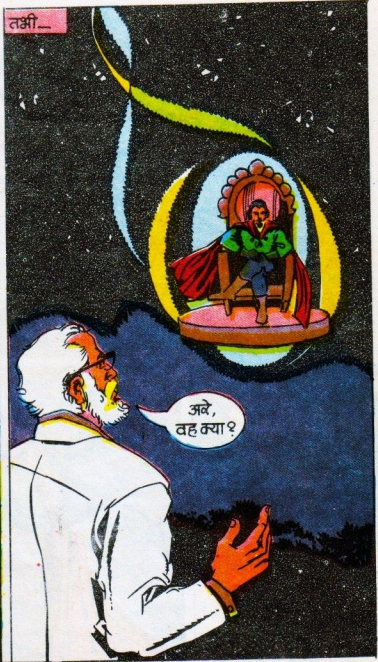
...उसी कैमरे के चमत्कार से तुम्हारी सियामी तस्वीर लगातार मुझे हरकत करती दिखाई दे रही है। ठीक पर्दे पर दिखाई देने वाले किसी चलचित्र के समान !
वाह! निःसन्देह तुम्हारे मस्तिष्क का कोई जवाब नहीं !
लेकिन मित्र, मुझे इस बात का आश्चर्य भी है कि तुम मेरी इस प्रयोगशाला तक पहुंच कैसे गये?
तुम्हारी उंगली में पड़ी अपनी अंगूठी की मदद से !
ओह!
सुनो प्रोफेसर, मुझे तुम्हारी सहायता की सख्त आवश्यकता है। मैं चाहता हूं कि तुम किसी प्रकार मेरे ग्रह पर आ जाओ और दुश्मनों से निपटने में मेरी मदद करो।
तुम्हारा सन्देश मुझ तक पहुंच गया था मित्र...
...लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे आदमी मुझसे मिले बगैर अचानक वापस क्यों लौट गये?
मजबूरी के कारण मित्र, दरअसल उनके यान में लगे सुरक्षा किरणों वाले यंत्र में कोई खराबी उत्पन्न हो गयी थी...
...और ऐसी अवस्था में जबकि तुम्हारा देश हमारे यान पर आक्रमण कर रहा था, उनका बिना सुरक्षा किरणों के वहां रहना खतरे से खाली नहीं था।
ओह!
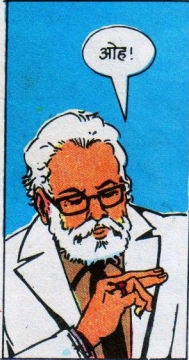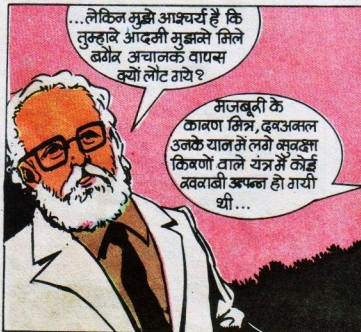
फिर सम्राट मंडोला ने प्रोफेसर भास्कर को क्रमानुसार जोवो के साथ जो पृथ्वी पर बीती थी, वह सारी कहानी कह सुनाई। साथ ही यह भी बता दिया कि कमांडर जोवो आदि के साथ-साथ उनका परिचित रहीम भी पड़ोसी दुश्मन वारटोम के हाथ लग गया है और इस समय वे सब दुश्मनों की ही कैद में हैं। सबकुछ जान कर प्रोफेसर भास्कर व्याकुल एवं चिन्तित हो उठे।
मित्र मंडोला, जो हुआ वह बुरा ही हुआ। खैर, मैं अन्तरिक्ष यात्रा के लिये अपना यान तैयार कर चुका हूं। कोशिश करूंगा कि कल ही तुम्हारे ग्रह के लिये रवाना हो सकूं!
धन्यवाद मित्र! मैं तुम्हारा यह एहसान कभी नहीं भूलूंगा•••

...अच्छा, विदा मेरे प्रिय मित्र! प्रक्षेपण यंत्र ज्यादा समय तक मेरी तस्वीर कायम नहीं रख सकता। मैं अपने ग्रह पर तुम्हारे पहुंचने की प्रतीक्षा करूंगा...

...लेकिन सावधान मित्र! हमारे ग्रह की सीमा पर दुश्मन वारटोम तुम्हें रोकने की पूरी कोशिश करेगा!
चिन्ता मत करो। उनका मुंह तोड़ जवाब देने की भी मैं पूरी तैयारी कर चुका हूं।
अगले पल मंडोला की त्रियामी आकृति अदृश्य हो गयी।

अब राम और मि॰ मुखर्जी को फोन पर सारी स्थिति से अवगत करा दूं!

ओह! इतनी रात गये किसका फोन हो सकता है?
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन

हैलो_ राम स्पीकिंग
राम, मैं प्रोफेसर भास्कर बोल रहा हूं...
...सुनो, अभी कुछ देर पहले मेरी मुलाकात जैकूला के सम्राट मंडोला की त्रियामी तस्वीर से हुई थी। उनके कहे अनुसार तुम्हारा साथी रहीम उनके आदमियों सहित दुश्मन की कैद में पहुंच गया है।
फिर भास्कर राम को मंडोला से हुई बातचीत के बारे में बताने लगे।
सारी बात सुनने के पश्चात—
आप जैकूला के लिये कब रवाना हो रहे हैं अंकल?
कल सुबह ग्यारह बजे के आस-पास।
ठीक है, मैं ग्यारह बजे से पहले आपके पास पहुंच जाऊंगा।
ठीक है, मैं मि. मुखर्जी को भी फोन कर देता हूं।
इसकी कोई जरूरत नहीं, मैं स्वयं उनसे बात कर लूंगा।
ओ.के. गुड नाईट!
अगले दिन सुबह—
डैडी किसी काम से बाहर जा रहे हैं और मम्मी घर के कामकाज में व्यस्त हैं। मौका अच्छा है, मुझे भी तैयार होकर घर से खिसक लेना चाहिये!

राम फटाफट तैयार हुआ और-
मम्मी की नजरों से बचकर बाहर निकलने के लिये यही रास्ता उपयुक्त है!
गैराज में जाकर राम ने चुपचाप अपनी मोटर साइकिल बाहर निकाली और उसे बिना स्टार्ट किये ही बंगले से बाहर सड़क पर निकल आया, फिर अगले ही पल-
मुझे घर पर न पाकर मम्मी-डैडी परेशान जरूर होंगे लेकिन मजबूरी है। उन्हें बता देता तो कदापि मुझे इस खतरनाक अंतरिक्ष यात्रा पर नहीं जाने देते!
कुछ ही देर बाद वह बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ मि० मुखर्जी के सामने था।
यह कैसे सम्भव हो सकता है राम! इतनी जल्दी मैं भला प्रोफेसर के साथ जाने के लिये उपयुक्त आदमियों का इन्तजाम कैसे कर सकता हूं? कम-से-कम मुझे इसके लिये दो दिन का समय चाहिये।
आदमियों की कोई जरूरत नहीं चीफ, मैं अकेला ही प्रोफेसर के साथ जाऊंगा।
यह तुम क्या कह रहे हो। तुम अकेले प्रोफेसर के साथ जाओगे। नहीं, मैं इसकी इजाजत हरगिज नही दे सकता। यह कोई साधारण अभियान नहीं है।
समय कम है चीफ! रहीम दुश्मनों की कैद में फंसा जिन्दगी का एक-एक क्षण गिन रहा होगा। अतः मैं किसी कीमत पर नहीं रुक सकता।
लेकिन...!
बहस में समय बर्बाद न करके मुझे आज्ञा दीजिये चीफ! रहीम का जीवन बचाने के लिये हमारा तुरन्त रवाना हो जाना ही अच्छा है। यदि उसे कुछ हो गया तो मैं कभी अपने आपको माफ नहीं कर सकूंगा।

और चीफ मुखर्जी को आखिरकार राम की जिद के आगे झुकना ही पड़ा।
ठीक है। यदि तुम नहीं मानते तो जाओ। मैं ईश्वर से तुम्हारी सफलता की प्रार्थना करूंगा।
यू आर ग्रेट चीफ अंकल! अब मैं चलता हूं।
ठहरो, प्रोफेसर की प्रयोगशाला तक मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।
तब जल्दी कीजिये, मुझे ग्यारह बजे से पहले-पहले उनके यहां पहुंचना है।
कुछ ही देर बाद-
राम बेटे, तुम्हें घर से अचानक ही लापता पाकर तुम्हारे मम्मी-डैडी बहुत परेशान होंगे। यदि उन्होंने इस सम्बंध में मुझसे पूछा तो मैं उन्हें क्या जवाब दूंगा?
मुझे आप पर विश्वास है चीफ अंकल कि आप उन्हें समझा देंगे।
तुम बहुत चालाक हो, अपनी परेशानी मेरे सिर डाल दी-खैर, देखूंगा!
लगभग आधे घंटे पश्चात् वे प्रोफेसर के सामने थे।
मुझे खेद है प्रोफेसर कि मैं इस अभियान में आपकी कोई सहायता नहीं कर पाया।
ईश्वर ऐसा ही करें!
आप चिन्तित न हों मि० मुखर्जी! मुझे अपने यान और आयुध आविष्कारों पर पूरा विश्वास है। हम जरूर सफल होकर लौटेंगे!
प्रोफेसर अंकल, मेरे विचार से हमें और समय नष्ट न करके तुरन्त अपनी यात्रा पर रवाना हो जाना चाहिये। क्या आपका यान उड़ान भरने के लिये तैयार है?
हां, आओ-वहीं चलते हैं!
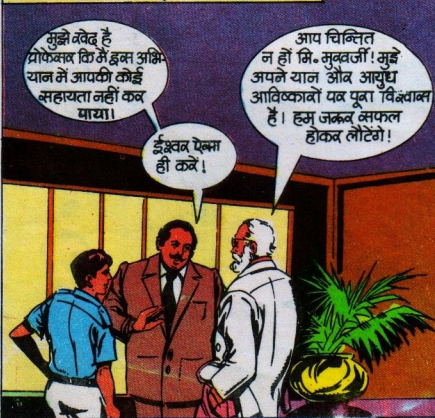
प्रोफेसर भास्कर का आधुनिक यान प्रकाश की गति से भी अधिक गति से पृथ्वी की आकर्षण सीमा को भेदकर आकाश गंगा में जा पहुंचा।
वाह! सपने में भी ऐसा नजारा कभी नहीं देखा। वैसे अंकल हमें जैकूला ग्रह में प्रवेश करने में कितना समय लगेगा?
लगभग तीन घण्टे। इस समय हमारा यान पांच हजार प्रकाश वर्ष प्रति घण्टे की गति से उड़ रहा है।
तभी_
बाप रे! अंकल, यान को तुरन्त उस विशाल अग्निपिण्ड से टकराने से बचाइये, वरना खैर नहीं!
घबराओ नहीं, मैं यान को उसकी सीध से अलग कर रहा हूं!
कहने के साथ ही प्रोफेसर ने सामने कन्ट्रोल बोर्ड पर लगे बहुत से स्विचों में से कुछ को दबाया। तुरन्त ही यान के रुख में परिवर्तन हुआ।
और_
उफ! बाल-बाल बचे!
इसी प्रकार कई उल्काओं एवं उपग्रहों से बचते हुए लगभग तीन घण्टे पश्चात_
राम बेटे, वह देखो_वह जो सितारा तुम देख रहे हो, वही जैकूला ग्रह है!
और वह कौन-सा ग्रह है अंकल?
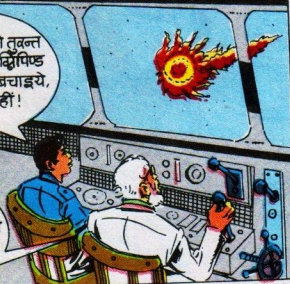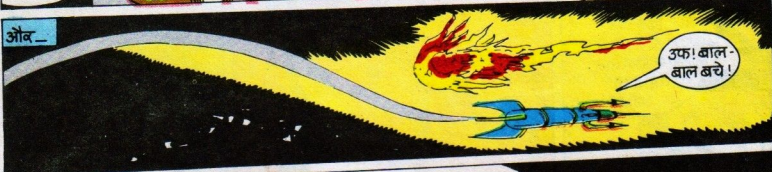
- क्या वारटोम ग्रह के यान प्रोफेसर भास्कर व राम को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर सके?
- प्रोफेसर भास्कर सम्राट मंडोला की सहायता कर सके या नहीं?
- रहीम, जिसका वारटोम ग्रह ने अपहरण कर लिया था, अपने देश भारत वापस आ सका या नहीं?

यह सब जानने के लिये पढ़ें– **"तबाही का देवता"**!

समाप्त